वैशाख पूर्णिमा व्रत कथा | **Vaishakh Purnima Vrat Katha**

कथा के अनुसार, कटिका नगर (Katika Nagar) में चंद्रहास (Chandrahas) नाम का एक राजा था जिसके पास धन-दौलत तो थी पर वंशज नहीं था। एक दिन एक योगी ने धनेश्वर ब्राह्मण के घर भिक्षा मांगी पर धनेश्वर और उनकी पत्नी रूपावती ने अभिमान में आकर योगी को भिक्षा नहीं दी। अपमानित महसूस करते हुए योगी ने धनेश्वर को निःसंतान रहने का श्राप दिया। निराश होकर रूपावती ने देवी चंडी की शरण ली। चंडी ने उन्हें 32 महीने तक लगातार वैशाख पूर्णिमा व्रत करने का निर्देश दिया। रूपावती ने ऐसा किया और 16 साल बाद एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। हालांकि, देवी ने चेतावनी दी थी कि उनका पुत्र केवल 16 साल तक ही जीवित रहेगा। अपने पुत्र की आयु बढ़ाने के लिए रूपावती को पति के साथ फिर से व्रत करने को कहा गया। उन्हें बताया गया कि अगर अंतिम दिन उन्हें आंवला का पेड़ दिखे तो वे उसका फल तोड़कर पुत्र को खिलाएं। ऐसा करने से उनका पुत्र लंबी और समृद्ध जीवन जीएगा।

www.janbhakti.in